आज़ाद फाउण्डेशन

आज़ाद परिंदे

न्यूज़लेटर (सीमित वितरण हेतु) आज़ाद फाउण्डेशन, वर्ष 2022 अंक 19

ज़िंदाबाद कमला,

हरदिल अज़ीज़ कमला भसीन को समर्पित

दोस्तों, हमारी अज़ीज़ दोस्त कमला भसीन के बारे में लिख रहे हैं तो वे अलग–अलग रूप में हमारे सामने आ रही हैं। कभी चाय पर बतियाते हुए, कभी गीत गाते हुए, कभी गंभीर मुद्दे पर संवाद करते, तो कभी आज़ाद के विशिष्ट प्रोग्राम में मुख्य अतिथि के रूप में हम सभी के हौसले बुलंद करते हुए। हम दोनों का उनके साथ विचारों का ही नहीं प्यार का रिश्ता रहा है, और हम ज़िन्दगी के संघर्षों में एक–दूसरे के साथ मिलकर खड़े रहे हैं। आज़ाद फाउंडेशन की वे सच्ची साथी थीं, समय–समय पर वह कुछ नया करने का विचार देतीं, दूसरे देश–संस्थाओं, लोगों से परिचय भी करातीं साथ में जब भी हम आग्रह करते ज़रूर हमारे साथ आती थीं।

वर्ष 2018 में आज़ाद के 'दस वर्ष पूरे होने के समारोह' पर आज़ाद की महिला ड्राइवर की निडरता, गरिमा और आत्मविश्वास की प्रशंसा ने उनका दिल जीत लिया। फरवरी 2019 को वह आज़ाद के 'किशोरी मेले' और 'संस्था के दस वर्षीय यात्रा' के जश्न में सम्मिलित होने जयपुर आयीं। उन्होंने जिस अंदाज़ में किशोरियों, युवकों, संस्था प्रतिनिधियों के साथ समानता के मुद्दे को 'परत–दर–परत' खोलकर समझाया वह केवल कमला ही कर सकती थीं। 2500 लोगों को एक गंभीर विषय को गहराई से समझा देने का कमाल कमला ही कर सकती थीं। कमला के व्यक्तित्व की बड़ी खूबी थी। वह एक जटिल राजनीतिक स्त्रीवादी बहस के सार को सहज तुकबंदी, लय और गीत में ढाल सकती थीं। उनके गीतों की धुनों और नारों पर गांव, बस्ती, राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सब मुक्तभाव से गाने–नृत्य करने लगते थे।

किशोरियों के उत्साह, आज़ाद के काम की गहराई को देखकर उन्होंने 50 किशोरियों को स्कॉलरशिप देने का ऐलान किया। धीरे से हमारे कान में यह भी कह दिया 'कि तुम इन्हें कॉलेज तक ज़रूर पढ़ा देना'। पहली बार बस्ती की 22 लड़कियों ने एक साथ आईटीआई में एडमीशन लिया है, लगभग इतनी ही बीए कर रही हैं और बाकी भी स्कूली शिक्षा पूरी कर के कॉलेज जाने के लिए तैयार हो रही हैं।

कमला भसीन का जन्म 24 अप्रैल, 1946 को वर्तमान पाकिस्तान के मंडी बहाउद्दीन ज़िले में हुआ था किन्तु जॉब के लिए पिता के कोटा आ जाने से उनका बचपन राजस्थान के कोटा शहर में बीता।

उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से मास्टर्स की डिग्री

उनके गीतों की धुनों और नारों पर गांव, बस्ती, राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सब मुक्तभाव से गाने–नृत्य करने लगते थे।

कमला भसीन जी मीनू वडेरा और अनिता माथुर के साथ

ली थी और पश्चिमी जर्मनी की मूंस्टर यूनिवर्सिटी से सोशियोलॉजी ऑफ डेवलपमेंट की पढ़ाई की। उन्होंने कनोडिया महाविद्यालय, जयपुर में कुछ समय पढ़ाया और फिर सेवा मंदिर, उदयपुर में काम किया। 1976–2001 तक उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के साथ काम किया। चंद दोस्तों के साथ जागोरी संस्था की शुरुआत की, इसके बाद 2002 से उन्होंने खुद को पूरी तरह से 'संगत' के कामों और ज़मीनी संघर्षों के लिए समर्पित कर दिया। वे लैंगिक समानता, शिक्षा, गरीबी उन्मूलन, मानव आधिकार और दक्षिण एशिया में शांति जैसे मुद्दों से जुड़ी रहीं। पितृसत्ता और जेंडर पर उन्होंने विस्तार से लिखा है। उनकी प्रकाशित रचनाओं का अनेकों भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

'नोबेल पुरस्कार के लिए 1000 महिलाओं की दावेदारी' अभियान में दक्षिण एशिया के लिए कमला भसीन संयोजक थीं। यह अभियान वर्ष 2003 से जनवरी 2005 तक चला। कमला भसीन इस बात को मानती थीं कि 'सिर्फ़ युद्ध का न होना शांति नहीं बल्कि सबको रोज़गार और रोटी मिले, सबको दवाइयाँ मिलें, अल्पसंख्यकों को सुरक्षा मिले और एचआईवी जैसे रोगों से लोग मिलकर लड़ें ये सब भी शांति के ही प्रयास हैं।'

'बेटी दिल में, बेटी 'विल' में, न दहेज़ न महंगी शादी, बेटी को देंगे संपत्ति आधी', कमला भसीन की ये पंक्तियां बीते कई सालों से बेटियों को जायदाद में हिस्सेदार बनाने में संघर्ष का ज़रिया बनी हैं। वे कहती थीं कि हमारे समाज में आज भी लड़की को अपने ही घर में पराये घर की अमानत की तरह पाला जाता है, अब जब सुप्रीम कोर्ट ने पिता की प्रॉपर्टी में बेटियों का हक़ सुनिश्चित कर दिया है, तो क्या लड़कियां 'पराया धन' की बजाय बेटी बन पाएंगी? इस दिशा में बदलाव के लिए वे सभी के साथ जुड़कर प्रयासरत रहीं। साल 2005 के पूर्व शादीशुदा महिलाओं का अपने मायके में (कानूनी रूप से) निवास का अधिकार भी नहीं था। क़ानून भी महिलाओं का असल घर ससुराल को ही मानता था। सुप्रीम कोर्ट के फैसले से इसको बदला गया और शादी के बाद बेटियों को भी मायके की संपत्ति पर बराबर के अधिकार दिए गए। कमला कहती थीं कि कानून बन जाने से हमारा संघर्ष खत्म नहीं हुआ, कानून के साथ समाज की मानसिकता भी बदलनी होगी और बेटियों को ही नहीं, बेटों यानी पुरुषों को भी जागरूक, संवेदनशील करना होगा। इसके लिए उन्होंने पुरुषों के साथ काम को अपने काम का हिस्सा बनाया और साथ में कई संस्थाओं को तैयार भी किया।

कमला कहती थीं कि कानून बन जाने से हमारा संघर्ष खत्म नहीं हुआ, कानून के साथ समाज की मानसिकता भी बदलनी होगी और बेटियों को ही नहीं, बेटों यानी पुरुषों को भी जागरूक, संवेदनशील करना होगा।

कमला जी जितनी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत थीं उतनी ही छोटी संस्थाओं के साथ भी जुड़ी रहीं। वे संस्थाओं की समय–समय पर आर्थिक मदद भी करती थीं। वे लेखिका, एक्टिविस्ट के साथ–साथ बहुत उम्दा ट्रेनर भी थीं। उनकी बात कहने की कला कुछ ऐसी थी कि सीधे दिल में उतर जाती थी। इस अंक में बहुत से युवाओं ने इस बात को अपने लेखन में दर्शाया है।

कमला अब शरीर से हमारे साथ नहीं हैं पर वह अपने व्यक्तित्व, लेखन और समाज के लिए किये योगदान के माध्यम से हमारे बीच रहेंगी। 25 सितम्बर 2021 की सुबह करीब 3 बजे उनका निधन हो गया।

आप सभी ने आज़ाद परिंदे के इस अंक में अपनी भावनाएं, संस्मरण अपने शब्दों में लिखे हैं जो बहुत महत्वपूर्ण धरोहर हैं।

हम अपनी बात साहिर के शब्दों में कहते हुए पूरी करते हैं :

जिस्म की मौत कोई मौत नहीं होती है !
जिस्म मिट जाने से इंसान नहीं मर जाते !!
धड़कनें रुकने से अरमान नहीं मर जाते !
साँस थम जाने से ऐलान नहीं मर जाते !!
होठ जम जाने से फ़रमान नहीं मर जाते !
जिस्म की मौत कोई मौत नहीं होती है !!
–साहिर

कमला की पूरी जिंदगी एक ऐलान है, एक उत्सव है, ज़िंदादिली की एक सतत कहानी है जो हमेशा आगे बढ़ती रहेगी, ज़िंदाबाद कमला।

● अनिता माथुर, मीनू वडेरा

गुणवान पुरुष समानता से नहीं डरते

मैं पहली बार उनसे एक जेंडर ट्रेनिंग के दौरान मिला। वे एक चुलबुली शख्सियत थीं – मैं लंच के बाद एक मुट्ठी माउथ फ्रेशनर भर के लाया और कमला दीदी को बोला मैं चोरी करके लाया हूँ तो बोलीं, "अकेले खाएगा तो पेट ख़राब हो जाएगा"। उस ट्रेनिंग के बाद कमला दीदी ने मुझसे कहा, "सतीश, क्या तू पुरुषों के साथ जेंडर की बात नहीं कर सकता?" फिर हमारी बहुत सी बातें हुई जैसे गांधियन नारीवाद पर और मैंने पूछा क्या मैं नारीवादी नहीं हो सकता? तो उन्होंने कहा, "किसने बोला तू नारीवादी नहीं हो सकता? हर महिला नारीवादी हो सकती है, हर पुरुष नारीवादी हो सकता है जो समानता की बात करे।" जब भी मुझसे कोई पूछता है कि कमला दीदी क्या काम छोड़ के गयीं तुम्हारे लिए – मैं कहता हूँ दो, एक प्रॉपर्टी राइट्स का पूरा काम जिसका उन्होंने नारा भी दिया था – "बेटी दिल में और बेटी विल में" और दूसरा केयर वर्क में पुरुषों की भागीदारी। जब–जब कमला दीदी याद आती हैं तो याद आते हैं उनके टेड–टॉक्स और उनका दिया हुआ वो बैग जिस पर लिखा है, "मेन ऑफ़ क्वॉलिटी आर नॉट अफ्रेड ऑफ़ इक्वॉलिटी" (गुणवान पुरुष समानता से नहीं डरते)।

● सतीश, मेन फॉर जेंडर जस्टिस, आज़ाद फाउंडेशन

मैं जो भी हूँ वो उसका एक हिस्सा है :-

कमला मेरी बहन थी – मेरे लिए एक मिसाल थी। वो मेरे लिए जोश और जज़्बे का प्रतीक थी। हम एक दूसरे को 40 सालों से जानते हैं – मुझे याद है हम एक बार कई अरसे बाद मिले, मैं उस समय दर्द से भरा हुआ था और मुझे इसे व्यक्त करने का अवसर नहीं मिला था। पता नहीं कैसे उसे कुछ लगा, उसने मेरे दर्द को महसूस किया और एक ज़ोर की झप्पी देदी। जब उसने मुझे गले लगाया तो मुझे बहुत शांति मिली और मैं खूब रोया।

मुझे याद है जब हम स्विट्ज़रलैंड में थे उसने किस तरह से यूरोपियन्स को जेंडर के बारे में हंसी – मज़ाक, व्यंग्य और बेहद प्रेम के साथ बताया और अपनी बात उन तक पहुंचाई। उसके गाने और वो मेरा हिस्सा हैं, मैं जो भी हूँ वो उसका एक हिस्सा है। उसने मुझे एक नई ज़िन्दगी दी और मेरा स्नेह, प्रेम उसके लिए कभी कम नहीं होगा।

● गगन सेठी, फाउंडर, जन विकास केंद्र एवं सेंटर फॉर सोशल जस्टिस

यादों से भरे पल

कमला भसीन हॉकी खेलना पसंद करती थीं, उन्हें मोटर साइकिल चलाना पसंद था! उन्होंने जेंडर समानता पर लिखा बाद में किन्तु इस सोच को उन्होंने अपनाया बचपन से। बहुत मिलनसार और हरफनमौला इंसान थीं। खुलकर अपने विचार रखती थीं।

● कांता आहूजा, रिटायर्ड वाइस चांसलर एवं कमला भसीन की प्रोफेसर

हिम्मतवाली कमला

आये हैं रे आये हैं, आये हैं रे आये हैं
कमला के सब साथी
कमला की यादें लेके
आये हैं सब साथी,
कमला की यादें लेके, कमला की यादें लेके,
उसकी प्यारी बातें लेके,
आये हैं रे आये हैं, आये हैं रे आये हैं
हिम्मतवाली कमला, संघर्ष करने वाली कमला
संघर्ष वाली किताबें लिखने वाली कमला
आये हैं रे आये हैं, आये हैं रे आये हैं

जब पहली दफा कमला दीदी हमारी बस्तियों में आया करतीं तो हैरानी होती कि इतनी अमीर औरत हमारा खाना खाती है। कैसे मानसिकता टूटती है ना? हमारी टूटी, कि वह जात–पात, अमीरी–गरीबी कुछ नहीं देखतीं। ये कमला दीदी थीं। कैसे बस्ती के अंदर उन्होंने बगैर बोले, बगैर भाषण दिए, अपने रवैये से हमारे अंदर गैर–बराबरी की धारणाओं को तोड़ा। कमला दीदी सत्ता से लड़ी अपने आप से, ऊँच–नीच से लड़ी । तो क्या हुआ? लाखों लोगों में वो बात पहुंची। तो कमला दीदी एक मज़बूत नारी, लाखों को मज़बूत बना के गयी हैं।

● शांति, मोबिलाइजेशन टीम, दिल्ली

औरत और आदमी में समानता

मैं 2012 से सखा और आज़ाद से जुड़ी हूँ। मैंने पहली बार सखा को टीवी पर देखा था और तब ही मैं कमला मैम से भी रूबरू हुई। जब वो टीवी पर बोल रही थीं तो मुझे लगा कि वो मेरे हित की बात कर रही हैं पर जब मैंने उन्हें सुना, समझा, फिर कुछ मुलाकातें भी हुई तो मुझे पता चला कि वो समाज के हित की बात कर रही हैं। वो औरत और आदमी में समानता देखती थीं और कोई भेद–भाव नहीं करती थीं। और मैंने भी यही चीज़ अपने जीवन में उतारी है।

● गीता, सखा ड्राइवर, दिल्ली

हमशीरा

मैंने जबसे अपने आप को जाना है तबसे मैं कमला को जानती हूँ। इतनी मुश्किल बात को इतना आसान कर देती है, इतना खूबसूरत कर देती है। जागोरी ग्रामीण में मेरी उनसे मुलाकात हुई– धीरे–धीरे हमारे बीच उर्दू एक्सचेंज होने लगी, हम लोग थोड़ी बहुत फ़ारसी पढ़ने लगे तो मैं उन्हें "हमशीरा" बुलाने लगी– ये एक पर्शियन शब्द है जिसका अर्थ है बहनें, जिन्होंने दूध बांटा हो। एक बार उन्होंने मुझसे कहा, "यार, ये लट्ठे की सलवार तू कहाँ से लाती है? जब दिल्ली से लौट कर आएगी तो मेरे लिए भी लेकर आना।" लॉकडाउन के दौरान मैं उनके घर के बाहर सलवार का पैकेट रख गाड़ी में बैठी तो आवाज़ आती है, "खदीजा सुन, इस सलवार में जेब लगवाई कि नहीं ?" मैंने बोला, "जेब है, बहुत बड़ी सी जेब है, बहुत सारे नोट भरके चलना"। ऐसा नहीं है कि ये कॉटन की सलवार कमला भसीन की पहुँच में नहीं थी। लेकिन ये उन्होंने खदीजा से रिश्ता बनाने के लिए एक पहल की।

जब पहली बार उनका स्कैन हुआ तो उनको एलर्जी से भयानक खुजली हो गयीं। और ऐसे में उन्होंने क्या किया? खुजली पर एक कविता लिखी "हाय खुजली, इधर खुजली, उधर खुजली"। आई. सी. यू. में गयीं तो पलटकर उन्होंने हमे सैल्यूट किया और हमने भी उन्हें सैल्यूट किया और वो जो उनकी शरारती मुस्कराहट थी, वो उनके आखरी वक़्त में भी उनके चेहरे पर थी।

● खदीजा

कमला का कारवां रुकने नहीं देंगे

मेरी यात्रा जब हम दोनों 15–16 साल के थे तब शुरू हुई। बचपन, यानि किशोरी अवस्था में, हम साथ–साथ पढ़ते रहे। कॉलेज में चार साल, राजस्थान यूनिवर्सिटी में दो साल, फिर वो निकल गयी जर्मनी। और फिर उसके एक साल बाद मैं भी उसके प्रयास से स्कूल ऑफ़ सोशल वर्क में दाखिला होने पर जर्मनी चली गयी। उसको खेल का बहुत शौक था, वो मैदान में रहती थी, बदमाशी करती थी, खुलके बोलती थी और लड़कों को बहुत चुनौती देती थी। हम साथ–साथ चलते ही रहे हैं। मिलकर, 1984 में जागोरी दिल्ली शुरू की, फिर 1988 में संगत शुरू किया, और 2002 में जागोरी रूरल में हम दोनों फाउन्डिंग मेम्बर रहे।

वो पचास साल का इतना बड़ा काम छोड़ के गयी है, उम्मीद है कि उसको आगे बढ़ाने की जिम्मेवारी आप युवा लोग लेंगे ताकि वो कभी भी हमें छोड़ के न जा सके, हम उसे छोड़के जाने नहीं देंगे। बहुत–बहुत सलाम और जैसा कमला कहती थी आज़ादी हमारा हक़ है।

● आभा भैया, जागोरी ग्रामीण, हिमाचल प्रदेश

Kamla Bhasin
24 April, 1946 - 25 September, 2021

Your life will continue to inspire us.
Azad Foundation

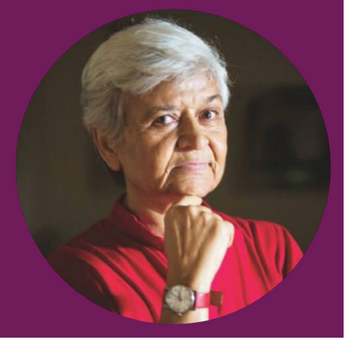

झूठ नहीं हम सहते, सत्यमेव जयते।

कमला का बिना किसी हिचकिचाहट के बात बोल देना, उसकी मस्ती के साथ–साथ उसकी निडरता, उसकी संगीत बनाने की क्षमता, जल्दी से कोई नारा बना देना, या जल्दी से लोकसंगीत की धुन लेके एक क्रांतिकारी गीत बना देना, ये सब उसके हुनर थे जो बहुत ही अद्भुत थे। हमारी पूरी ज़िन्दगी में चालीस साल की दोस्ती रही है और उसने कई तरह से मेरा साथ दिया। एक बार इंद्रप्रस्थ कॉलेज में आर. टी. आई. स्टोरी का लोकार्पण करना था तो कमला भी मेरे साथ आयी। मैंने उससे कहा कि तुम भी कुछ कहो। तब तक उसने किताब नहीं पढ़ी थी तो खड़े होकर उसने कहा, "ये दो स्लोगन्स मैंने अभी तक किसी के साथ ट्राय नहीं करे – आपके साथ पहली बार ट्राय कर रही हूँ:

आर. टी. आई. करनी है कैसे, सत्यमेव जयते।
सत्य के सारे भक्त हैं कहते, सत्यमेव जयते।
झूठ नहीं हम सहते, सत्यमेव जयते।
झूठ नहीं हम कहते, सत्यमेव जयते।
आर. टी. आई. करनी है कहते, सत्यमेव जयते।
रक्षा संविधान की करते, सत्यमेव जयते।
रक्षा मानव अधिकार की करते, सत्यमेव जयते।
भ्रष्टाचार नहीं अब सहते, सत्यमेव जयते।
जो सच है वही हम कहते, सत्यमेव जयते।
भ्रष्ट नेता बहते जाते, सत्यमेव जयते।
भ्रष्ट अफसर नहीं अब रहते, सत्यमेव जयते।
आर. टी. आई. करनी है कैसे, सत्यमेव जयते।"

● अरुणा रॉय, फाउंडर, मजदूर किसान शक्ति संगठन

तुम्हारे जैसा न कोई था, और न कोई होगा

कमला मेरे लिए एक दोस्त, एक गुरु थी। उनका लक्ष्य था पूंजीवादी पितृसत्ता को मिटाना और शोषण को ख़तम करना। आज़ादी हर किसम की– ऊंच–नीच से, खुलकर अपनी बात कहने के लिए, आज़ादी जश्न के लिए। वो एक दार्शनिक ज़िन्दगी जीती थी और स्वदेशी इलाज और योग करती थीं । अपनी कैंसर की जंग में उसने एक बार फिर हौसला दिखाया। वो कॉर्पोरेट मॉडर्न साइंस और मेडिसिन की आलोचना करती थी। वो एक कवियित्री थी, लेखिका थी, फेमिनिस्ट आइकॉन जिसने औरतों की लड़ाई सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरे साउथ एशिया में लड़ी। उसके गाने आज बच्चे गाते हैं। सभी आंदोलनों में उसके बनाये नारे गूंजते है। कमला ने सिर्फ अपनी राह चली नहीं पर उसको ढूँढा, बनाया– अपने लिए, मेरे लिए, हम सबके लिए। जो भी मुश्किलें उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में देखीं, झेलीं – उसने अपनी लड़ाई – शान्ति, हक, और न्याय की लड़ाई कभी नहीं छोड़ी। तुम्हारे जैसा न कोई था, और न कोई होगा।

● सुनीता धर

मैं जंग नहीं लड़ूंगी, मैं उसमें विश्वास नहीं करती

मैं कमला को उदयपुर में सेवा मंदिर से जानती हूँ । दो साल सेवा मंदिर में काम करने के बाद वो एफ. ए. ओ. के काम से थाइलैंड चली गयीं और जब वापस आयीं तो हमने अपनी दोस्ती की शुरुआत वहीं से की जहाँ हमने उसे छोड़ा था। औरतों के आंदोलन के चलते हमारी बात–चीत जारी रही, और हम मीटिंग्स, ट्रेनिंग्स, सुखद और दुखद समय में साथ रहे। कमला के स्टेज 4 कैंसर के बारे में सुनने पर हमारी एक दोस्त ने उन्हें लिखा, "प्यारी कमला, ये सुनकर दुख हुआ। क्या तुमने लिवर ट्रांसप्लांट के बारे में सोचा है? तुम्हारा अभी बहुत काम बाकी है, हम तुम्हें अभी नहीं खो सकते। लड़ो कमला, तुम अकेली नहीं हो, तुम्हारी बहनें तुम्हारे साथ लड़ रही हैं – प्यारी गर्जा।" कमला ने इसका जवाब भेजा, "गर्जा, मेरा ज़िन्दगी को देखने का तरीका तुमसे थोड़ा अलग है। किसी का भी काम कभी ख़त्म नहीं होता। यहाँ तक कि जीसस और बुद्ध का भी काम ख़त्म नहीं हुआ था तो मैं कौन हूँ! मैंने भगवान् से यही माँगा कि भगवान् तुम मुझे जो दोगे, मैं उसे अपना लूंगी। मैंने 75 वर्ष एक सुंदर ज़िन्दगी जी है, अपने विकलांग बेटे के साथ। मेरी चिंता मत करो– मैं जंग नहीं लड़ूंगी, मैं उसमें विश्वास नहीं करती।"

● जिनी श्रीवास्तव

जल, जंगल, ज़मीन किसकी है? हमारी है। हमारी है।

जब भी मैं कमला से मिलती थी, हम सिर्फ गाना गाते थे। वीडियोज़ ही वीडियोज़ हैं गाने के जो कमला फेसबुक पर डाल देती थी और सारे लोग मुझ से कहते थे "यार तुम क्या करवा रही हो कमला से?" मैंने कहा "नहीं, वो क्या करवा रही है हमसे। अभी भी उसमें इतनी जान है"।

गाँधी जी ने दो चीज़ें बोली थीं – "इतना बहुत है इस दुनिया में जितनी ज़रूरत है, लेकिन हमारे लालच के लिए, हमारे लोभ के लिए कभी भी काफ़ी नहीं है।" हम जिस तरीके से इस धरती को ख़तम कर रहे हैं और जल–वायु को हमने बदल दिया है – बारिश हो रही है जब बारिश नहीं होनी चाहिए, बाढ़ आ रही है जहाँ बाढ़ नहीं आनी चाहिए। कमला का ये कहना था, "ये पितृसत्ता की सबसे कठिन लड़ाई है। पितृसत्ता ने औरत के शरीर पर, उसके श्रम पर, और यौनिकता पर कब्ज़ा किया लेकिन जब आपने संसाधनों पर कब्ज़ा किया तो वो संसाधन खुद ही नष्ट हो जाएंगे। पितृसत्ता की ये सबसे कठिन लड़ाई नारीवाद और गांधीवाद से लड़ी जा सकती है, जिसमें हम अंबेडकर को नहीं भूल सकते हैं।"

आज जब हम कमला को याद करें तो हमें हमारी पृथ्वी को खुद से जोड़ना है – ऐसी दुनिया बनानी है जिसमें चारों ओर पेड़, पक्षी, पौधे, और पानी हो।

● कविता श्रीवास्तव, मानव अधिकार कार्यकर्ता

यादें जो ज़िन्दगी हैं

कमला भसीन उमंग स्कूल आई थी, तब स्कूल की बिल्डिंग बन गयी पर गेट नहीं लगे थे। उन्होंने कहा कि गेट क्यों नहीं हैं! मेरे कहने के अंदाज़ से वे समझ गयीं कि धीरे–धीरे पैसों के जुगाड़ अनुसार काम किया जा रहा है! उन्होंने बात का अंदाज़ बदल कर कहा कि 'अरे, ये लो गेट लगाओ, अगली बार आऊं तो कोई मेरे लिए गेट खोले! इतना तो होना चाहिए ! '

इस तरह वे न जाने कितनों की सहायता अपने अंदाज़ से कर देती थीं!

बहुत यादें साथ हैं, अभी तो मेरे साथ उनका अंश भी है जो उन्होंने हमारी झोली में डाला है! शायद हमारा अपना बेटा जब इस दुनिया से गया तो कुछ अधूरा रह गया जिसके लिए अब हमें यह बेटा मिला है ! वे जहाँ भी हैं, हमें गाइड करती रहेंगी, उनकी शक्ति और आशीर्वाद हम सभी के साथ बना रहेगा!

● दीपक कालरा, प्रिंसिपल, उमंग स्कूल

मुझे दर-दर नहीं भटकना है, सो पढ़ना है,
मुझे अपने पांवों चलना है, सो पढ़ना है,
मुझे अपने डर से लड़ना है, सो पढ़ना है,
मुझे अपने आप को गढ़ना है, सो पढ़ना है,
क्योंकि मै लड़की हूँ, मुझे पढ़ना है ।

● कमला भसीन

हंसने-गाने की - आज़ादी
सब कुछ कहने की - आज़ादी
निर्भय रहने की - आज़ादी
है प्यारा नारा - आज़ादी
हम सबका नारा - आज़ादी
नारी का नारा - आज़ादी

कमला भसीन 2019 में आयोजित जश्न–ए–कारवां में

उनकी याद

कमला भसीन जी ने दी नारी को नयी पहचान
आज उनकी वजह से कुछ बदला है संसार
उनकी सोच को लेकर जाएं,
हम लोग चांद के उस पार
यही कोशिश रहती है और रहे यही हर बार
उनकी शिक्षा ने समझाया ये है असमानता
उन्होंने बताया क्यों जुल्म सहे नारी?
उनकी वजह से आया है कुछ बदलाव
एक दिन ऐसा आएगा कि
बदल जाएगा संसार
बताया उन्होंने नारी का अधिकार
उनकी वजह से नारी जानी क्या करना है आज
हमारे बीच वो नहीं पर है उनका प्यार
देते हैं हम उनको सम्मान
अब उनके विचार से बदलेगा संसार
उनकी वजह से बदले हैं हम
और अब बदलेगा संसार।

● फिज़ा परवीन, फेमिनिस्ट लीडर, कोलकाता

कमला भसीन जनवरी 2019 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ''मेकिंग एनटीएल वर्क फॉर द मार्जिनलाइज़्ड'' में

कमला भसीन 2018 में दिल्ली में आयोजित जश्न–ए–कारवां में

हम सब एक हैं और एक रहेंगे

1990 में मैं पूर्वी भारत के पहले जेंडर अनुसन्धान संगठन के साथ काम कर रही थी जब मेरी मुलाकात कमला से हुई। उसके बाद बांग्लादेश में जेंडर ट्रेनिंग में मैं शामिल हुई जो कमला कराती थीं। मुझे सच में ये नहीं पता था कि इस ट्रेनिंग से मेरा एक नया दौर शुरू होगा, जिससे मुझे सिर्फ एक रास्ता और मकसद ही नहीं बल्कि जीने की एक सीख भी मिलेगी। कमला ने हम दक्षिणी एशिया से आयी लड़कियों को एक ऐसी जगह ठहराया जहाँ पर शान्ति, सुकून, और भावनाओं का आदान–प्रदान हो सकता था। इस ट्रेनिंग से पहले हमें ये पता था कि क्रियाविधि, सोच, और अनुसन्धान का क्या महत्व है लेकिन अब यह कितना ज़रूरी होता है, पता चला। कमला ने जान–बूझ के हमें एक ऐसी जगह ठहराया जहाँ हम अपने परिवार, दोस्त, और दुनियादारी से बहुत दूर थे। और ये ज़रूरी है अगर आपको सच में, मन से कुछ सीखना और समझना है, अपने आप से सवाल करने हैं और उनका जवाब ढूंढना है। पर इन बातों में बहुत सी व्यक्तिगत बातें भी बाहर आती थीं। एक भारी सत्र के बाद आंखों से आसूं और दर्द बाहर आ जाता था। आज ये एक मामूली बात है लेकिन उस ज़माने में ऐसा नहीं था। कमला ने लोगों को दुख बाँटना, भूलना और उसे झेलना सिखाया। हर रोज़ ट्रेनिंग ख़तम हो जाने के बाद, कमला सबको बैठाकर चुटकुले सुनाती और हम सब हंस–हंस कर बेहाल।

भारत के नारीवादी आंदोलन में सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण नाम कमला का था क्यूंकि उन्होंने नारीवाद को एक आम औरत और आदमी के समझने लायक बनाया। मैं आज भी कमला की लिखी हुई किताबों का सहारा लेती हूँ, पितृसत्ता, हिंसा, और नारीवाद समझने के लिए। कमला की ट्रेनिंग और सहयोग का सबसे बड़ा प्रमाण है कि मैं अपने साथ हुए शोषण के बारे में सबसे बात कर पायी। कमला ने मुझे ये हिम्मत दी कि मैं अपने दोनों पैरों पर एक ऊँची सोच के साथ खड़ी हो सकूँ।

आज़ाद के साथ उनके काम की सबसे बड़ी खासियत थी कमला का सादापन और व्यावहारिक स्वभाव। उन्होंने सदैव अपने आप को "साउथ एशियाई" कहा और उनके कारण आज पूरे दक्षिण ी एशिया के नारीवाद को एक दिशा मिली है। वो कहती थीं, "हम सब एक हैं और एक रहेंगे, तो ही बदलाव आ पाएगा।" कमला ने अपने जीवन में बहुत कठिनाई देखीं और उसके बावजूद हमेशा हर किसी के हक के लिए लड़ीं– चाहे वो औरत हों, मर्द या बच्चे।

● डोलोन गांगुली, नेशनल लीड–प्रोग्राम, आज़ाद फाउंडेशन

मैं ऐसी बहुत सी स्त्रियों को जानती हूँ जो पितृसत्ता की पैरोकार हैं, जो स्त्री होकर भी स्त्री की विरोधी हैं ! लेकिन मैं ऐसे पुरुषों को भी जानती हूँ जो महिला अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं! फ़ेमिनिज़्म बायोलौजिकल मामला नहीं है यह तो आइडियोलौजिकल मामला है! नारीवादी पुरुष भी हों और महिलाएं भी!'

● कमला भसीन

चित्रकार :– सुजाता हलदर

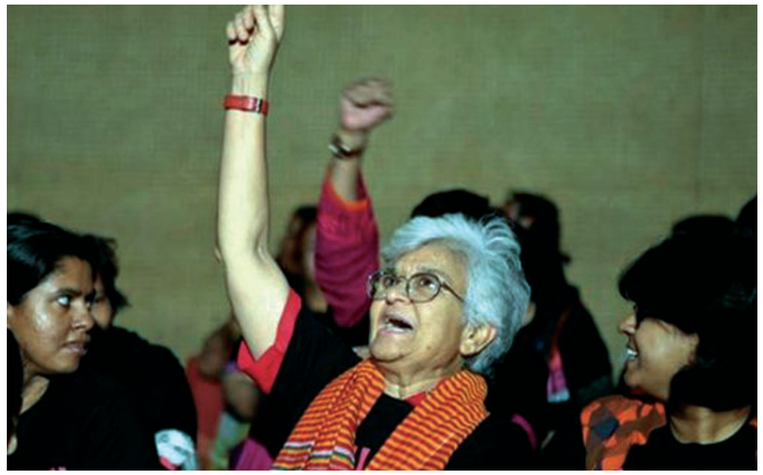

नारीवादी आन्दोलन में पुरुषों को भी शामिल करना होगा

कमला भसीन के व्यक्तित्व के अनेकों रूप हैं इसी तरह से उनके काम का दायरा और उनके सामाजिक सरोकारों का दायरा भी काफ़ी विस्तृत रहा है। कमला ने जहाँ पितृसत्ता और उसके चलते महिलाओं पर होने वाले असर पर बात की है वहीं उन्होंने पितृसत्ता से पुरुषों को होने वाले नुकसान की भी बात की है। कमला ने अपने विचारों में, अपनी ट्रेनिंग में, इस बात को हमेशा रखा है कि यदि हमें जेंडर बराबरी को हासिल करना है तो नारीवादी आन्दोलन में पुरुषों को भी शामिल करना होगा. उन्होंने हमेशा विषाक्त मर्दानगी के ख़िलाफ़ और समानतावादी पुरुषों के साथ बराबरी की सोच को फैलाने के लिए काम किया। आज़ाद फाउंडेशन में मेन फॉर जेंडर जस्टिस कार्यक्रम की संरचना, पुरुष कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण में उनके सुझावों और उनके द्वारा रचित पठन सामग्री ने, आज़ाद में पुरुषों के साथ होने वाले काम को ज़मीनी स्तर पर खड़ा करने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

कमला का यह दृढ विश्वास था कि हमारा समाज स्त्री और पुरुषों दोनों की पितृसत्ता के बन्धनों से मुक्ति से ही बेहतर बनेगा। पुरुषों को कुछ चीज़ें समझने की जरूरत है: पहली बात, वे तब तक मुक्त नहीं होंगे, जब तक स्त्री मुक्त नहीं होगी, दूसरी बात, लैंगिक समानता कुल जमा ज़ीरो का मामला नहीं है. ऐसा नहीं है कि इससे सारे फायदे औरतों को ही मिलेंगे और पुरुषों का केवल नुकसान होगा। कमला ने अनेकों बार यह कहा है पितृसत्ता पुरुषों का अमानवीकरण (डिह्यूमनाइज) कर रही है. जैसे, उदाहरण के लिए, पितृसत्ता उन्हें रोने की इजाज़त नहीं देती। उन्होंने अपना इमोशनल इंटेलीजेंस खो दिया है।

कमला ने आज़ाद में पुरुषों के साथ आयोजित एक वार्तालाप में कहा था "मेरा अनुभव है कि अच्छे गुणों वाले पुरुष समानता से नहीं डरते हैं उन्हें अपनी मर्दानगी साबित करने के लिए किसी को पीटने की जरूरत नहीं है, आप पाएंगी कि सारे प्रबुद्ध पुरुषों के भीतर मर्द के साथ स्त्री भी बसती है. वे न मर्द हैं, न स्त्री, वे आधे पुरुष हैं, आधे स्त्री। उनमें मर्द और स्त्रियों के सर्वोत्तम गुण हैं". मेरा मानना है कमला हमारे समय की सबसे प्रमुख मानवतावादी रही हैं जिन्होंने न जाने कितनी महिलाओं और पुरुषों को अपनी सोच अपने लेखन, अपनी कविताओं के माध्यम से प्रेरित किया है। आज़ाद फाउंडेशन को उनका स्नेह और व्यक्तिगत तौर पर जो स्नेह और प्यार कमला ने मुझे दिया है वो अविस्मरणीय है।

● श्रीनिवास राव, नेशनल लीड–प्रोग्राम, आज़ाद फाउंडेशन

कुदरत भेद बनाती है, भेदभाव नहीं। समाज कुदरत के बनाए भेद के आधार पर भेदभाव करने लगता है।

औरतों के आज़ाद हुए बग़ैर मर्द आज़ाद नहीं हो सकते

● कमला भसीन

छात्रवृत्ति से पढ़ाई में मदद मिली

मैं सन् 2018 में आजाद फाउंडेशन के स्कूल ट्रेनिंग प्रोग्राम में जुड़ी थी जिस दौरान मुझे आजाद मीतो छात्रवृत्ति के लिए चुना गया जो कमला दीदी की बेटी के नाम पर थी। इस राशि से मुझे पढ़ाई में बहुत मदद मिली और 12वीं में अच्छे अंक की वजह से मैंने आज अच्छे कॉलेज से आईटीआई पूरी कर ली है। मैं जब कमला दीदी से मेले में मिली और उन्हें सुना तो मैं बहुत प्रेरित हुई। उनको सुनने के बाद मैंने भी अपने जीवन में बहुत सा बदलाव किया। एक तो घर में अपने भाई का वो काम जो वो खुद भी कर सकता है उसमें मदद करना बंद किया। मन में कुछ भी बात हो तो निडरता से सबको बोलने लगी और आज मैं जो भी कर पाई हूँ, जहां भी हूँ उसमें कमला दीदी की प्रेरणा व उनके द्वारा दी गई छात्रवृत्ति का पूरा सहयोग है ।

● रिंकू जगरवाल, आजाद किशोरी लीडर एवं मीतो स्कॉलर, जयपुर

पति नहीं, साथी बनूँगा

कमला दीदी के अलग–अलग विडियो देखने, उनके विचार जानने से अपने में बदलाव महसूस होता है। सत्यमेव जयते कार्यक्रम का विडियो देखा, उनके शब्द मुझे याद आते हैं, उन्होंने कहा कि औरत की शादी आदमी से होती है और वह पति कहा जाता है। पति का मतलब तो मालिक हुआ जैसे करोड़पति यानि कि करोड़ों का मालिक! तो इसका मतलब एक स्वामी तो दूसरा दास ! यह सरासर गलत है! शादी में रिश्ता ऊपर –नीचे का नहीं बराबरी का होता है। जीवन साथी बनना है, पति नहीं। यह सुनकर मैंने निर्णय किया कि जब मै शादी करूँगा तो मैं पति नहीं, जीवन साथी बनूँगा! एक दूसरे को सहयोग करके आगे बढ़ने में उसके फैसलों का सम्मान करूँगा।

आज कमला हमारे साथ नहीं हैं पर उनकी बातें, गीत, कविताएं हमारा मार्गदर्शन करती रहेंगी।

● उमेश, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, जयपुर

2018 में जागोरी ग्रामीण में मेन फॉर जेंडर जस्टिस प्रोग्राम के तहत युवा लड़कों के लिंग, पितृसत्ता और पुरुषत्व पर आवासीय प्रशिक्षण में कमला भसीन

कमला भसीन 2019–20 में जयपुर में आयोजित आज़ाद किशोरी मेले में

आगाज़ कर दिया है अब न रोके रुकूंगी

बचपन से परिवार, पड़ोस, जहाँ गयी वहीं देखा कि लडकियां स्कूल या काम से आकर चौका–चूल्हा, घर की देखरेख, गृहस्थी के कभी न खत्म होने वाले काम करती हैं। वहीं पिता–भाइयों का स्कूल या काम से आकर बाहर घूमने जाना या चौराहे की दुकान पर खड़े रहना। मुझे लगा यह सही है, भगवान ने हमें ऐसा बनाया है। किन्तु यह सच नहीं है यह जाना आज़ाद फाउंडेशन में आकर। अपनी कमाई, अपना कंट्रोल, लड़कियां हर काम कर सकती हैं। मैंने भी ज़िन्दगी को अलग तरह से जीना शुरू किया। ट्रेनिंग के दौरान और 2019 में कमला जी को सुनकर मेरे निर्णय और मज़बूत होते गए याद रहा तो बस ' तू खुद को बदल, तू खुद को बदल तब ही तो जमाना बदलेगा...' ! आज मैं आर्थिक रूप से सशक्त हूँ, ट्रेनर के रूप में कई लड़कियों को ड्राइविंग की ट्रेनिंग दे चुकी हूँ। भाई–बहन पढ़कर अच्छी जॉब कर रहे हैं। परिवार की आर्थिक हालत बेहतर है। मैंने एक ज़मीन अपने लिए खरीद ली जिस पर मालिकाना हक़ मेरा है। कमला भसीन ने मेरी सोच को उड़ान दी, जिससे अब मैं 'क़दमों में भरकर हौसलों की उड़ान, चीरकर मौजों का सीना, मै हूँ चली क्षितिज के उस पार'!

● पूनम, ट्रेनर, आज़ाद फाउंडेशन, जयपुर

लिंग अंतर - अब और नहीं
कौशल में अंतराल, वेतन में अंतराल - अब और नहीं
कम कुशल नौकरियों में महिलाएं - अब और नहीं
कम वेतन वाली नौकरियों में महिलाएं - अब और नहीं
महिलाओं को आखिर में काम पर रखा जाना - अब और नहीं
महिलाओं को सबसे पहले काम से निकाल दिया जाना - अब और नहीं
तो फिर, भूमिकाओं का अनुचित लिंग विभाजन - अब और नहीं!

न कम न ज़्यादा
चाहिए हमें आधा-आधा

जागोरी ग्रामीण में आज़ाद के कम्युनिटी लीडर्स का प्रशिक्षण

महिला होगी निडर,
जब हो उसका अपना घर।

मेरी प्रेरणा

कमला दीदी का औरतों को सम्मान देना, उनकी इज़्ज़त करना, दिल को बहुत छूता है। और उनकी कही सबसे अच्छी बात थी कि अगर किसी लड़की का बलात्कार हुआ हो तो लोग बोलते हैं उसकी इज़्ज़त लुट गयी। लेकिन क्या उस महिला की इज़्ज़त उसकी योनि में रखी है? नहीं। बल्कि इज़्ज़त तो बलात्कार करने वाले की जानी चाहिए। उनकी कही हर वो बात मुझे प्रेरणा और हौसला देती है जो औरतों के हक़ में कही गयी है।

● खुशी प्रजापति, ट्रेनर, आज़ाद फाउंडेशन, दिल्ली

घर-परिवार से मिला समर्थन

मैं 2017 में ओ. बी. आर. कैंपेन में कमला भसीन जी से मिली थी जहाँ मैं अपनी मम्मी को भी लेकर गयी थी। उन्होंने पितृसत्ता के बारे में विस्तार से बोला तो सुनकर मेरी माँ की आँखों में आंसू आ गए। आज़ाद फाउंडेशन में फेमिनिस्ट लीडर के रूप में काम के दौरान हमारी कई सारी ट्रेनिंग होती थीं जिनके लिए हमें घर से दूर जाना होता था। मैं एक मुस्लिम परिवार से हूँ और मेरे भाइयों को मेरा जॉब करना पसंद नहीं था। तब मैं अपने भाइयों से झूठ बोल कर ट्रेनिंग के लिए जाती । कमला दीदी की बातों से प्रभावित होकर मेरी मम्मी ने मेरा साथ दिया और मेरे भाइयों को समझाया। इसके बाद मेरे एक भाई ने मुझसे और मम्मी से बात करना छोड़ दिया था। 2017 और 2022 के बीच बहुत कुछ बदला, आज मैं काउंसलर के रूप में दिल्ली महिला आयोग में नाइट जॉब करती हूँ और मेरे घर में सब मेरा समर्थन करते हैं। ये बदलाव कमला दीदी की सोच से संभव हो सका।

● शाहीन परवीन, फेमिनिस्ट लीडर, दिल्ली

क्या कभी आपने कोई
मुस्कुराता चेहरा देखा है,
जो खूबसूरत न हो?

जागोरी ग्रामीण में आज़ाद के कम्युनिटी लीडर्स का प्रशिक्षण

रोको न क़दमों को
जब उठते हैं, चूम लेते हैं आसमां।
सोच-विचार को लेने दो उड़ान
हर सोच बना देती है नया जहांन।

● रितु, मोबिलाइजेशन टीम, दिल्ली

मैं चाहती हूँ

मैं अपने जैसे जीना चाहती हूँ।
अपना जीवन खुद बनाना चाहती हूँ।
गलत काम के खिलाफ कठिन हाथ से लड़ना चाहती हूँ।
समाज का निर्माण करना चाहती हूँ।
शिक्षा का मूल्यांकन करना चाहती हूँ।
सुरक्षित सड़कें चाहती हूँ।
भ्रष्टाचार को रोकना चाहती हूँ,
इस समाज में महिलाओं के
उत्पीड़न को रोकना चाहती हूँ।
हर काम में, एकजुट होना चाहती हूँ।

● कयकशा शकील, फेमिनिस्ट लीडर, कोलकाता

अब पर लगा लिए हैं हमने तो
अब पिंजरों में कौन बैठेगा?

ओ हो! तो इसलिए आप
लोगों को ज़्यादा मज़दूरी मिलती है

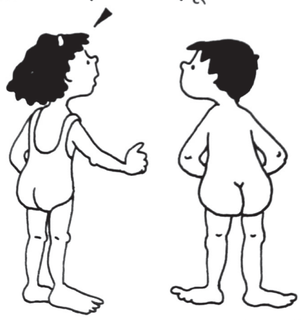

कमला भसीन की किताब 'हंसना तो संघर्षों में भी जरूरी है' से

अब अपने मन की करनी है

औरों के मन की कर देखी, अब अपने मन की करनी है
औरों के रस्ते चल देखे, अब अपनी डगर पकड़नी है।
उठने को कहा तो उठ बैठे, जब बैठ कहा तो बैठ गए
औरों के इशारों पर चल-चल, जिस्मों जान अब ऐंठ गए
औरों से अपनी डोर छुड़ा, अब अपनी डोर पकड़नी है
औरों के मन की कर देखी, अब अपने मन की करनी है।
औरों का बसेरा करने में, हम खुद न कभी आबाद हुए
हर शौहर ऊँचा दिख पाए, हम नीचे हो बरबाद हुए
औरों की पीड़ा हर देखी, अब अपनी पीड़ा हरनी है
औरों के मन की कर देखी, अब अपने मन की करनी है।
अपने सपनों की कब्रों पे, उनके सपनों को पनपाया
उनकी हर हसरत पूरी हो, अपनी हसरत को दफनाया
औरों की झोली भर देखी, अब अपनी झोली भरनी है
औरों के मन की कर देखी, अब अपने मन की करनी है।

परिंदों सी बन रही हैं लड़कियां
उन्हें उड़ने में मज़ा आता है
उन्हें मंज़ूर नहीं उनके परों का
काटा जाना।

अगर मैं खाना पका सकती हूँ
तो हर मर्द भी पका सकता है
क्यूंकि मैं खाना
बच्चेदानी से नहीं पकाती।

'सिर्फ महिलाओं के संसद में आने से चीजें बेहतर नहीं होंगी! मैं चाहती हूँ कि अधिकाधिक नारीवादी महिलायें संसद में पहुंचें! जब नारीवादी महिला, स्त्री-पुरुष समानता की बात करेंगी तो वे महिला जाति के चक्कर में पीछे नहीं हटेंगी! मैं नारीवादी महिला ही नहीं नारीवादी पुरुष भी चाहती हूँ, क्योंकि यह सोच, कोई जिस्मानी सोच नहीं है! नारीवादी से हमारा मतलब है समानता और सिर्फ समानता !'

कमला भसीन की किताब 'हंसना तो संघर्षों में भी जरूरी है' से

मैं सरहद पर बनी दीवार नहीं
मैं तो उस दीवार पर पड़ी दरार हूँ।

पितृसत्ता का उल्टा बराबरी है

कमला भसीन जी से, उनकी कही बातों से मुझे प्रेरणा मिली। मुझे आज भी याद है जब सत्यमेव जयते पर कमला जी ने पूछा कि पितृसत्ता का उल्टा क्या होता है तो लोगों ने कहा मातृसत्ता। तब कमला दीदी ने जवाब दिया कि अगर पितृसत्ता गलत है तो मातृसत्ता भी गलत है। पितृसत्ता का उल्टा बराबरी है और महिला दासी नहीं, बराबर की इंसान होगी तब ही मोहब्बत होगी। कमला दीदी, आप हमेशा लोगों के दिलों में रहेंगी।

● वीरू, मेन फॉर जेंडर जस्टिस, दिल्ली

मैं दो कारणों से नारीवाद को बहुवचन में लिख रही हूँ: एक तो इसलिए कि मुझे स्त्रीलिंग-पुल्लिंग का इस्तेमाल न करना पड़े, दूसरा इसलिए क्योंकि मेरी नज़र में एक नहीं अनेक हैं नारीवाद।

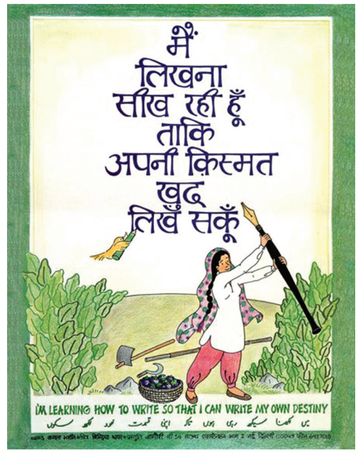

कमला भसीन अवार्ड फॉर ड्राइविंग द वर्ल्ड टुवर्ड्स जेंडर इक्वॉलिटी

'कमला भसीन अवार्ड फॉर ड्राइविंग द वर्ल्ड टुवर्ड्स जेंडर इक्वॉलिटी' की परिकल्पना आज़ाद फाउंडेशन द्वारा कमला भसीन की स्मृति में की गयी है। यह पुरस्कार भारत और दक्षिण एशिया क्षेत्र में महिला आंदोलन में उनके बहुमूल्य योगदान को मान्यता प्रदान करने के लिए है। कमला भसीन ने 1988 में एक दक्षिण–एशियाई महिला नेटवर्क संगत की सह–स्थापना की। उन्होंने कई किताबें, पुस्तिकाएं, गीत और कहानियां लिखीं और प्रकाशित कीं, जिनमें से कई को लगभग 30 भाषाओं में पुनः प्रस्तुत किया गया है। वह ग्लोबल वन बिलियन राइज़िंग मूवमेंट का भी अभिन्न हिस्सा रही हैं। कमला, जो आजाद फाउंडेशन की मित्र और मार्गदर्शक रही हैं, और गैर–पारंपरिक आजीविका पर हमारे काम के लिए उनका समर्थन अटूट रहा है। उन्होंने अपनी समालोचना के माध्यम से आज़ाद के काम का समर्थन किया और साथ ही प्रशिक्षण अध्यापन और अभ्यास में योगदान दिया। कमला एक प्रमुख नारीवादी थीं जिन्होंने लैंगिक समानता की दिशा में पुरुषों के साथ जुड़ने की वकालत की। यह पुरस्कार उनके जीवन भर की उपलब्धियों का सम्मान और जश्न मनाने के लिए है। यह पितृसत्ता से लड़ने के लिए पुरुषों, महिलाओं और ट्रांसपर्सन्स द्वारा किए जा रहे प्रयासों को प्रोत्साहित करने और एक जेंडर समानता व न्यायपूर्ण समाज की दिशा में काम करने के लिए भी है, जहां महिलाएं गरिमा के साथ आजीविका प्राप्त कर सकती हैं और अपने जीवन और शरीर पर नियंत्रण हासिल कर सकती हैं। इस पुरस्कार में दक्षिण एशिया शामिल होगा जिसमें अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका शामिल हैं।

पुरस्कारः दो पुरस्कार श्रेणियां होंगी जिसमें प्रत्येक श्रेणी से एक व्यक्ति को एक लाख भारतीय रुपये (100,000 रुपये) से पुरस्कृत किया जाएगाः

1. गैर–पारंपरिक आजीविका (एनटीएल) में कार्यरत एक महिला, अन्य लैंगिक पहचान वाले व्यक्ति
2. एक पुरुष अन्य लैंगिक पहचान वाले व्यक्ति जिनके जेंडर समानता व न्यायपूर्ण समाज की दिशा में काम से महिलाओं को सम्मान के साथ आजीविका लेने का प्रोत्साहन मिला हो।

प्रक्रिया और समयरेखा:

पुरस्कार 8 मार्च, 2022 को लॉन्च किया गया है। आवेदकों को एक नामांकन फॉर्म भरने की ज़रूरत है, वे स्व–नामांकन कर सकते हैं या किसी अन्य व्यक्ति या संगठन द्वारा नामित किये जा सकते हैं। साक्षात्कार के लिए उम्मीदवारों से संपर्क किया जाएगा और चयनित उम्मीदवारों की सूची विचार–विमर्श के लिए जूरी को भेजी जाएगी। जूरी प्रत्येक श्रेणी से सबसे होनहार उम्मीदवार की पहचान करेगी। अंतिम रूप से चयनित उम्मीदवारों को 30 नवंबर– दक्षिण एशियाई महिला दिवस पर पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्राप्त होगा।

यहां आवेदन करें: http%@azadfoundation.com@kamla&bhasin&award@

जूरी से मिलें:

बांग्लादेश

खुशी कबीर एक सामाजिक कार्यकर्ता, नारीवादी और पर्यावरणविद हैं। वह वर्तमान में 'निजेरा कोरी संस्था' की समन्वयक हैं। वह विभिन्न राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मंचों में मानद क्षमता में रही हैं– जैसे बोर्ड ट्रस्टी ऑफ द सेंटर फॉर पॉलिसी डायलॉग की सदस्य, संगत के लिए क्षेत्रीय सलाहकार और वन बिलियन राइज़िंग ग्लोबल कैंपेन के लिए बांग्लादेश कोऑर्डिनेटर।

नेपाल

बिंदा पांडे एक नेपाली राजनीतिज्ञ हैं और नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी का प्रतिनिधित्व करने वाली पहली नेपाली संविधान सभा की सदस्य हैं। वह 2004–08 के दौरान नेपाली ट्रेड यूनियनों के जनरल फेड्रेशन की उप महासचिव थीं। उन्हें 2011–2017 में अर्न्तराष्ट्रीय श्रम संगठन शासी निकाय के उप सदस्य के रूप में चुना गया था। वर्तमान में वह 'विमन इन नेपाली पॉलिटिक्स' नामक पुस्तक लिख रही हैं।

इंडिया

अनु आगा एक भारतीय अरबपति व्यवसायी और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। उन्होंने 1996 से 2004 तक थर्मेक्स, एक ऊर्जा और पर्यावरण इंजीनियरिंग व्यवसाय का नेतृत्व किया। उन्हें 2010 में भारत सरकार द्वारा सामाजिक कार्यों के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया था, और अप्रैल 2012 में उन्हें भारतीय संसद के ऊपरी सदन, राज्यसभा के लिए नामित किया गया था। वह वर्तमान में टीच फॉर इंडिया की चेयरपर्सन हैं।

नमिता भंडारे एक पुरस्कार विजेता पत्रकार हैं, जिन्हें संडे, इंडिया टुडे और दैनिक हिंदुस्तान टाइम्स सहित विभिन्न प्रकाशनों के लिए लगभग 30 वर्षों का रिपोर्टिंग अनुभव है। 2013 में, उन्हें मिंट अखबार के लिए भारत की पहली जेंडर संपादक नियुक्त किया गया था और 2016 तक वह इस पद पर रहीं। उन्होंने महिलाओं और काम पर लेखों की एक श्रृंखला लिखी है।

सलिल शेट्टी वर्तमान में ओपन सोसाइटी फाउंडेशन में ग्लोबल प्रोग्राम्स के उपाध्यक्ष हैं। वह 2010 से 2018 तक एमनेस्टी इंटरनेशनल के महासचिव थे और शैक्षणिक वर्ष 2018–19 के लिए हार्वर्ड केनेडी स्कूल के कैर सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स में उन्हें एक वरिष्ठ फेलो के रूप में नियुक्त किया गया।

पाठकों के लिए विशेष सूचनाः आप में से जो भी अखबार के लिए लिखना चाहते हैं, सबके साथ बाँटना चाहते हैं ... अपनी कहानी, कोई रोचक अनुभव, कोई संदेश या ख़ास खबर, कोई चित्र या फोटो, शेर–ओ–शायरी, गीत–चुटकुला या विचार, चिंताएँ, कुछ भी, तो ...

संपादकः शिखा डिमरी

अन्य सहयोगीः परिधि यादव और अमृता गुप्ता

आर–10, फ्लैट नं. 7, दूसरी मंज़िल, नेहरू इंक्लेव, कालका जी, नई दिल्ली–110019

फोन : 011.49053796 • वेबसाइट : www.azadfoundation.com

www.azadfoundation.com @azadfoundationIndia

@azadfoundationIndia @FoundationAzad

–: डिस्क्लेमर :–

आज़ाद फाउण्डेशन और सखा दो अलग-अलग संस्थाएँ हैं।

आज़ाद एक एन.जी.ओ. है और सखा एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी।

मुक्त पिंजरे के पक्षी

न रहूंगी और बंद पिंजरे में
आज़ाद होकर घूमूंगी-
डर की हदें पार करके
अधिकार के लिए लड़ूंगी।
मैं बेटी हूँ-मेरे अनेक रूप
क्यों सहूंगी मैं समाज के जुल्म?
महिला होकर पैदा होना क्या अपराध इतना है?
बेटी भ्रूण जब दुनिया में आना चाहती हैं
फिर आप हमें मार डालते हो, कोई मानवता नहीं?
पितृसत्तात्मक समाज केवल
पुरुषों को बड़ा बनाता है।
लेकिन जानो उस पुरुष को
स्त्री के गर्भ में ही पैदा होना है।
महिलाओं के अधिकारों के साथ
खेलता है जो समाज-
उस महिला का हाथ पकड़ कर ही,
शुरू होता है समाज में उनका चलना ।
क्या यह आज़ादी वास्तव में है आज़ादी?
लकड़ी की गुड़िया की तरह
नाचती हूँ पुरुष के अधीन-
मुझे अब डर नहीं है-
दुनिया में अब होगी जीत नारीवाद की।

• सुजाता हलदर, सखा पिंक कैब ड्राइवर, कोलकाता